Pujya Mata Sahib Hasi Devi

Sant, Pujya Mata Sahib Hasi Devi, a great spiritual saint of Sanatan Dharma and the Sindhi community, was born in 1826 at Khanpur Mahar in Sindh, then a part of undivided India.

In 1852, at the age of 26, she became the first woman spiritual head in the Shadani saint tradition and the fifth Peethadheeshwar of the historic Shadani Darbar Tirth. For the next 57 years, she guided devotees through her teachings of devotion, humility, compassion, and selfless service. Deeply committed to the ideals of Sanatan Dharma, she dedicated her life to the welfare of society, particularly the poor, widows, orphans, and other underprivileged sections.

She placed great emphasis on education and cultural values. Under her guidance, the Sant Shadaram Dharmik Pathshala was established in 1907 to impart education in Hindi, Sanskrit, and Music. She encouraged both boys and girls to receive moral and spiritual education and inspired several disciples who later emerged as distinguished saints and spiritual leaders, including Sant Bhagat Kanwarram, Sant Manglaram Sahib, and Sant Rajaram Sahib.

Mata Sahib Hasi Devi was renowned for organizing continuous community kitchens (Bhandaras) and personally participated in every aspect of service, from collecting grain and preparing food to serving devotees. During a severe famine in Sindh, her prayers and efforts enabled the Darbar to continue feeding the needy, an event that remains cherished in popular memory.

In 1858, under her inspiration, the Shri Guru Granth Sahib and the Shrimad Bhagavad Gita were ceremonially installed at Shadani Darbar Hayat Pitafi, Sindh, reflecting her message of spiritual harmony and reverence for sacred knowledge. In 1880, she undertook a pilgrimage on foot from Sindh to Haridwar, where she performed worship and took a holy dip in the River Ganga on 13 April 1880.

She attained Brahmaleen on 30 April 1909 after entrusting the sacred Shadani Gaddi to Sant Manglaram Sahib. Her legacy continues through the activities of Shadani Darbar in Hind & Sindh, which promotes education, healthcare, music, cultural values, devotional traditions, and public service under the guiding principle: “Service to Humanity is Service to God.”

The Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Pujya Mata Sahib Hasi Devi in recognition of her outstanding contributions to spirituality, education, social service, and the promotion of cultural values.

Credits:

Stamp / First Day Cover / Brochure / Cancellation Cachet:	:	Ms. Nenu Gupta
Text	:	Based on the content provided by the proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts



पूज्य माता साहिब हासी देवी

PUJYA MATA SAHIB HASI DEVI

विवरणिका BROCHURE

पूज्य माता साहिब हासी देवी

सनातन धर्म और सिंधी समुदाय की महान आध्यात्मिक संत, पूज्य माता साहिब हासी देवी का जन्म 1826 में अविभाजित भारत के सिंध प्रांत के खानपुर महर नामक स्थान में हुआ था।

वर्ष 1852 में, मात्र 26 वर्ष की आयु में 'शदाणी संत परंपरा' में पहली महिला आध्यात्मिक प्रमुख और ऐतिहासिक 'शदाणी दरबार तीर्थ' की पांचवीं पीठाधीश्वर बनीं। तत्पश्चात, उन्होंने अगले 57 वर्ष तक भक्ति, विनय, करुणा और निस्वार्थ सेवा भावना संबंधी अपनी शिक्षाओं के माध्यम से अनेकानेक भक्तों का मार्गदर्शन किया। सनातन धर्म के आदर्शों के प्रति गहन श्रद्धा रखने वाली संत हासी देवी ने अपना समस्त जीवन समाज, विशेष रूप से दरिद्रजनों, विधवाओं, अनाथों तथा अन्य वंचित वर्गों के कल्याणार्थ समर्पित किया।

माता साहिब हासी देवी ने शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया। उनके मार्गदर्शन में, वर्ष 1907 में हिंदी, संस्कृत और संगीत की शिक्षा प्रदान करने हेतु 'संत शदाराम धार्मिक पाठशाला' की स्थापना की गई। उन्होंने बालकों और बालिकाओं दोनों को नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपनी शिक्षाओं से संत भगत कंवरराम, संत मंगलराम साहिब और संत राजाराम साहिब सहित अनेक शिष्यों को प्रेरित किया, जो कालांतर में प्रतिष्ठित संतों और आध्यात्मिक गुरुओं के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

माता साहिब हासी देवी अखंड सामुदायिक रसोई (भंडारा) के संचालन के लिए प्रसिद्ध थीं और वह स्वयं अनाज एकत्र करने, भोजन तैयार करने तथा उसे भक्तों को परोसने तक, सेवा के इस पुण्य कार्य में प्रत्येक स्तर पर अपनी भूमिका निभाती थीं। एक समय, सिंध में गंभीर अकाल के दौरान, जब दरबार में जरूरतमंदों को भोजन कराना मुश्किल हो गया तो संत माता हासी देवी ने अपनी प्रबल प्रार्थनाओं और अथक प्रयासों से शदाणी दरबार की सामुदायिक रसोई को अनवरत जारी रखा और सभी के लिए निरंतर भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित की। संकट काल में किए गए उनके ये प्रयास आज भी जन–जन की स्मृति में अंकित हैं।

वर्ष 1858 में, उनकी ही प्रेरणा से, 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' और 'श्रीमद भगवद् गीता' को हयात पिताफी, सिंध स्थित शदाणी दरबार में औपचारिक रूप से स्थापित किया गया। इन दोनों ग्रन्थों की एक साथ स्थापना उनके आध्यात्मिक सद्भाव और पवित्रतम ज्ञान के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा को दर्शाती है। वर्ष 1880 में, माता साहिब हासी देवी ने सिंध से हरिद्वार तक पैदल यात्रा की, जहां उन्होंने पूजा–अर्चना कर 13 अप्रैल 1880 को श्री माँ गंगा में पवित्र डुबकी लगाई।

संत मंगलराम साहिब को पवित्र शदाणी गद्दी सौंपने के पश्चात, माता साहिब हासी देवी 30 अप्रैल 1909 को ब्रह्मलीन हो गईं। हिंद और सिंध में उनकी विरासत 'शदाणी दरबार' के माध्यम से आज भी पल्लवित हो रही है। यह संस्थान आज भी "मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा" के अपने मार्गदर्शक सिद्धांत के अनुसार शिक्षा, स्वास्थ्य, संगीत तथा जनसेवा के अनेकानेक कार्यों का निष्पादन कर रहा है और सांस्कृतिक मूल्यों एवं भक्ति परंपराओं को सँजोए रखने हेतु प्रयासरत है।

डाक विभाग शिक्षा, समाज–सेवा, तथा अध्यात्म को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान देने वाली महान पूज्य माता साहिब हासी देवी पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	303530
Stamps Printed	:	303530
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00